MSK – 001

परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

(जुलाई, 2020 एवं जनवरी, 2021 सत्रों के लिए)

MSK – 001 संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य (2020–21)

पाठ्यक्रम कोड : MSK-001/2020–21

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2020 सत्र के लिए : 31 मार्च 2021

जनवरी 2021 सत्र के लिए : 30 सितंबर 2021

सत्रीय कार्य

MSK- 001 संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

पाठ्यक्रम कोड – MSK-001
पाठ्यक्रम शीर्षक – संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य
सत्रीय कार्य – MSK – 001/TMA/2020-2021

पूर्णांक – 100
नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. अधोलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :– 20X3=60

(क तत्किंस्वरूपं तावत्काव्यमित्यपेक्षायां कश्चिदाह–''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि''। इति।

एतच्चिन्तयम्। तथाहि– यदि दोषरहितस्यैव काव्यत्वाङ्गीकारस्तदा–

''न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयस्तत्राऽप्यसौ तापसः
सोऽप्यत्रैव निहन्ति राक्षसकुलं जीवत्यहो रावणः।
धिग्धिक्छक्रजितं प्रबोधितवता किं कुम्भकर्णेन वा
स्वर्गग्रामटिकाविलुण्ठनवृथोच्छूनैः किमेभिर्भुजैः''।।

अस्य श्लोकस्य विधेयाविमर्शदोषदुष्टतया काव्यत्वं न स्यात्। प्रत्युत ध्वनित्वेनोत्तमकाव्यताऽस्याङ्गीकृता, तस्मादव्याप्तिर्लक्षणदोषः।

अथवा

भेदौ ध्वनेरपि द्वावुदीरितौ लक्षणाभिधामूलौ।

अविवक्षितवाच्योऽन्यो विवक्षितान्यपरवाच्यश्च।।2।।

तत्राविवक्षितवाच्यो नाम लक्षणामूलो ध्वनिः। लक्षणामूलत्वादेवात्र वाच्यमविवक्षितं बाधितस्वरूपम्।

विवक्षितान्यपरवाच्यस्त्वभिधामूलः, अत एवात्र वाच्यं विवक्षितम्। अन्यपरं व्यङ्ग्यनिष्ठम्। अत्र हि वाच्योऽर्थः स्वरूपं प्रकाशयन्नेव व्यङ्ग्यार्थस्य प्रकाशकः। यथा प्रदीपो घटस्य। अभिधामूलस्य बहुविषयतया पश्चान्निर्देशः।

(ख) तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी–

मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।

आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां

सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।।

अथवा

एभिः साधो! हृदयनिहितैर्लक्षणैर्लक्षयेथा

द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ च दृष्ट्वा।

क्षामच्छायं भवनमधुना मद्वियोगेन नूनं

सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्।।

(ग) दारिद्र्यादि्घ्रयमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसो
निस्तेजाः परिभूयते परिभवान्निर्वेदमापद्यते।
निर्विण्णः शुचमेति शोकपिहितो बुद्ध्या परित्यज्यते
निर्बुद्धिः क्षयमेत्यहो निर्धनता सर्वापदमास्पदम्।।

अथवा

खलचरित निकृष्ट जातदोषः कथमिह मां परिलोभसे धनेन।

सुचरितचरितं विशुद्धदेहं न हि कमलं मधुपाः परित्यजन्ति।।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखिए– 2X10=40

2. महाकाव्य का लक्षण स्पष्ट करते हुए रघुवंश महाकाव्य के वर्ण्य-विषय एवं शैली पर अपने विचार लिखिए।

3. दृश्य काव्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालते हुए रूपक भेदों को स्पष्ट कीजिए।

4. साहित्यदर्पण के अनुसार श्रृंगार रस को परिभाषित करते हुए उसके भेदोपभेदों पर प्रकाश डालिए।

5. आचार्य विश्वनाथ के अनुसार मुख सन्धि का लक्षण उद्धृत करते हुए उसके अंगों को स्पष्ट कीजिए।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 2X10=20

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का चरित्र-चित्रण (लगभग 500 शब्दों में) कीजिए–

(क) यक्ष (ख) यक्षिणी

(ग) चारुदत्त (घ) वासवदत्ता

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर (लगभग 500 शब्दों में) टिप्पणी लिखिए–

(क) धीरोदात्त नायक (ख) स्वीया नायिका

(ग) धीरललित नायक (घ) साधारण स्त्री